एकांत का सौंदर्य क्या होता...!!

ब्र.कु. उषा,वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

दुनिया के अन्दर लोग एकांत में रहना नहीं चाहते हैं। पर अभी विशेष लॉकडाउन के समय तो हरेक ने महसूस किया कि एकांत माना वो समझने लगे अकेलापन। और उस अकेलापन में कई लोग डिप्रेशन में भी गये। दुनिया के अन्दर डिप्रेशन का आँकड़ा भरता गया,क्योंकि लोगों को जैसे कोई है नहीं, किसके साथ बात करें तो इसीलिए जो है एकांत भाता नहीं है। लेकिन हम बाबा के बच्चों को एकांत बहुत अच्छा लगता है। क्यों? क्योंकि इसमें हम अपनी जितनी उन्नति करना चाहें, जितनी अपनी प्रोग्रेस करना चाहें वो हम सहजता से कर सकते हैं। एकांत का मतलब क्या? जब कहते हैं एकांत का सौंदर्य। तो उसका सौंदर्य क्या है? ऐसे कई बार बाबा ने उसका अर्थ बताकर कहा है कि एकांत माना एक के अंत में खो जाना। लेकिन एक के अंत में खोने के लिए हमें सुन्दर विचार चाहिए। क्यों सुन्दर विचार चाहिए ताकि अन्दर में कहीं वो डिप्रेशन वाले, कमज़ोरी के विचार न आयें। जैसे डिप्रेशन में लोग जाते हैं तो वो सभी को अपने आप से दूर कर देते हैं। और एकांत में ही फिर निगेटिव सोचते रहते हैं। इसी कारण से वो डिप्रेशन में जाते हैं। और एकांत के सौंदर्य का अनुभव नहीं कर पाते।

एकांत का अनुभव करने के लिए बहुत सुंदर विचार चाहिए। और उसमें भी जब एक बाबा के अंत में खोना है तो खुशी में जैसे बाबा कहता है ना कि मनसा-वाचा-कर्मणा तीनों में खुश रहो, हल्के रहो। तो जितना अन्दर में खुशी होगी उतना एकांत बहुत अच्छा लगेगा। खुशी वाले संकल्प हों, और खुशी-खुशी से जब हम बाबा की याद में समाते हैं तो जैसे उसका आनंद अलौकिक होता है। इसीलिए ये एकांत का सौंदर्य अनुभव करने के लिए सबसे पहले खुशी के आधार पर आनंद की स्थिति में अपने आप को स्थित करना। उसी आनंद से नींद नहीं आयेगी, निगेटिव विचार नहीं चलेंगे और सहजता से हम उसमें समा जायेंगे। बाबा की याद में बहुत अन्दर में मज़ा आयेगा।

दुनिया में जब ऋषि-मुनियों ने एकांत का अनुभव किया, अगर उसका विज़न मैं आपके दिमाग में उत्पन्न करने के लिए कहूँ तो क्या अनुभव होगा? क्या विज़न बनेगा, क्या चित्र आपके सामने आयेगा। ऋषि-मुनि एकांत में बैठा है, कहाँ बैठा होता है? गुफा में बैठा होता है या हिमालय पर बैठा होता है ऐसे ही एक चित्र सामने आता है। इसीलिए हमें बाबा भी कहते हैं कि तुम्हें एकांत का अनुभव करने के लिए गुफा में बैठ जाना है, हमारी गुफा कौन-सी है? भीतर जाना। आत्मा की भृकुटि की ये गुफा है। इसीलिए हमें कहीं बाहर जाने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि हमारा एकांत अन्दर में है। और जितना आत्मा के, उस भृकुटि के मध्य की गुफा में हम अपने आपको ले चलें और गुफा में बैठते हैं तो एकदम साइलेंस। जैसे लोग हिमालय आदि पर चले जाते हैं तपस्या आदि करने के लिए, एकांत में बैठ जाते हैं। अर्थात् हर प्रकार के आवाज़ से दूर हो जाना। लेकिन अगर अन्दर में बहुत आवाज़ हो तो क्या करेंगे? अन्दर में ही व्यर्थ संकल्पों का आवाज़ हो तो क्या करेंगे कहाँ जायेगा व्यक्ति? इसीलिए बाबा कहते हैं कि तुम्हें शरीर से कहीं भी जाने की ज़रूरत नहीं है, कहीं हिमालय पर जाने की ज़रूरत नहीं है लेकिन हम अपने मन को भीतर ले जायें और उस भृकुटि की गुफा में साइलेंस बैठ जायें। लेकिन साइलेंस भी कैसी, खुशी वाली साइलेंस।

आनंद वाली साइलेंस जिसको कहा जाता है स्वीट साइलेंस। एक है डेड साइलेंस। हमें डेड साइलेंस में नहीं जाना है। हमें स्वीट साइलेंस में बैठना है। बहुत मीठी वो अवस्था हो अन्दर की, खुशी की अवस्था हो, आनंद की अवस्था हो उसको कहते हैं स्वीट साइलेंस। तो उस गुफा में अन्दर जाना है। उस समय मन को एकाग्र करना है बाबा के उस स्वरूप पर। याद आता है कि जब पहली बार शिव बाबा का अवतरण हुआ ब्रह्मा बाबा में, तो बाबा ने सबसे पहले अपने परिचय में क्या कहा? निजानंद स्वरूपम शिवोहम... शिवोहम... बाबा की अनंत महिमा है लेकिन उस समय में भी भगवान ने अपना परिचय दिया कि मैं निजानंद स्वरूप हूँ। मैं नित्यानंद स्वरूप हूँ और इसीलिए दुनिया में भी लोगों ने इसी को ही हाइएस्ट अचीवमेंट कहा। सर्वश्रेष्ठ अगर प्राप्ति है राजयोग की तो वो है निजानंद का अनुभव करना, क्योंकि उससे क्या होता है अतीन्द्रिय सुख जो आज तक मनुष्य इन्द्रियों के सुख के पीछे भागते रहे, उसका अनुभव करने के लिए भागते रहे, उसमें आनंद ढूंढते रहे, लेकिन जब आत्मा निजानंद के स्वरूप में हो तो अतिन्द्रिय सुख का अनुभव होगा और एकांत माना निरसता नहीं, अकेलापन नहीं, लेकिन एकांत माना अतिन्द्रिय सुख का अनुभव करना। इसीलिए निजानंद स्वरूप का भगवान ने जो परिचय दिया, इसीलिए बड़े-बड़े ऋषि मुनियों ने भी उसे अनुभव करना चाहा। आनंद को सर्वश्रेष्ठ क्यों माना गया है? क्योंकि आनंद का कोई अपोजिट नहीं है। जैसे सुख का अपोजिट दुःख है, खुशी का अपोजिट उदासी है, हर एक चीज़ का अपोजिट मिलेगा। लेकिन आनंद का कोई अपोजिट नहीं,आनंद माना आनंद। तो इसीलिए वो सर्वश्रेष्ठ प्राप्ति मानी गई।

ब्रह्मा बाबा के कई ऐसे चित्र बने हुए हैं जो देखते हैं कि बाबा पहाड़ों पर ऐसे हाथ रखके बैठे हुए हैं, कैसे एक आनंद की स्थिति में खोए हुए हैं। 93 वर्ष की आयु में बाबा को कहीं झुटका आ गया हो ऐसा नहीं हुआ। क्यों? क्योंकि बाबा उस परम आनंद में रहते थे। मनसा-वाचा-कर्मणा खुशी में रहते थे। इसीलिए जब बैठते थे तो परमआंनद की स्थिति में सहजता से अन्दर चले जाते थे। ये है एकांत।

जयपुर-वैशाली नगर(राज.)। महेश जोशी,कैबिनेट मंत्री,राज.सरकार को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. अनामिका बहन एवं ब्र.कु. एकता बहन।

कुशीनगर-उ.प्र.। स्वतंत्रता दिवस पर 'हर घर तिरंगा' अभियान के अंतर्गत आयोजित रैली का हरी झंडी दिखाकर शुभारंभ करते हुए बीज विकास मंत्री राजेश्वर सिंह। साथ हैं स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मीरा बहन तथा अन्य भाई-बहनें।

आरा-भोजपुर(बिहार)। पुलिस अधीक्षक संजय कुमार सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. किरण बहन।

ओम शान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें

कार्यालय - ओम शान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न-5,आबू रोड, राज. 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088,
Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक - 240 रूपये, तीन वर्ष - 720 रूपये, आजीवन - 6000 रूपये

Website: www.omshantimedia.org

For Online Transfer

BANK NAME:- STATE BANK OF INDIA(SBI)
ACCOUNT NAME:- OM SHANTI MEDIA
ACCOUNT NO: - 30826907041,IFSC - CODE - SBIN0010638
BRANCH- Prajapita Brahmakumaris Ishwariya Vishwa Vidhyalya,Shantivan

Note:- AfterTransfer send detail on
E-Mail - omshantimedia.acct@bkivv.org
OR
Whatsapp, Telegram No.:- 9414172087

ALL-IN-ONE QR

Paytm
Accepted Here
Wallet KYC NOT Required

Scan & Pay using Paytm App

Wallet or Bank A/c | Any Debit or Credit Card | Paytm Postpaid

BHIM UPI

चरखी दादरी(हरियाणा)। जिला उपायुक्त को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रेमलता बहन।

सिवनी मंडी-हरियाणा। ऑटो मार्केट के प्रधान एवं प्रसिद्ध उद्योगपति राम प्रकाश चोपड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजेन्दर बहन।

दिल्ली-दिलशाद कॉलोनी। अल्का शर्मा, एडिशनल कमिश्नर,म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन ऑफ दिल्ली,ईस्ट दिल्ली को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. तनुजा बहन।

फतेहाबाद-हरियाणा। पूर्व सीपीएस चौधरी प्रहलाद सिंह गिल्लाखेड़ा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी दीदी।

अयोध्या-उ.प्र.। दशरथ महल के महंत देवेन्द्र दास जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओम शांति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. उषा बहन।

सोनीपत-हरियाणा। डॉ. नितिन रावल को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रमोद दीदी तथा ब्र.कु. सुनीता दीदी।

रसड़ा-उ.प्र.। एस.डी.एम. सर्वेश यादव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. जागृति बहन।

दिल्ली-बवाना। श्यामा प्रसाद मुखर्जी दिल्ली यूनिवर्सिटी की प्रोफेसर डॉ. चंद्रकांता के.माथुर को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. चंद्रिका दीदी।

चिरकुंडा-झारखण्ड। पंचेत दामोदर वैली कॉर्पोरेशन(डीवीसी) सीआईएसएफ स्टाफ को रक्षासूत्र बांधने से पूर्व रक्षाबंधन का महत्व बताते हुए ब्र.कु. पिंकी बहन।